يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ

जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा[69] एक पास जगह से[70] जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे[71]

بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا

हक़ के साथ येह दिन है क़ब्रों से बाहर आने का बेशक हम जिलाएं और हम मारें और हमारी

الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا

तरफ़ फिरना है[72] जिस दिन ज़मीन उन से फटेगी तो जल्दी करते हुए निकलेंगे[73] येह हश्र है हम को

يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ قف

आसान हम ख़ूब जान रहे हैं जो वोह कह रहे हैं[74] और कुछ तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं[75]

فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾ ع

तो कुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे

ع ٣ ١٧

اٰيَاتُهَا ٦٠ ﴿٥١﴾ سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ٦٧ رُكُوْعَاتُهَا ٣

सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾

क़सम उन की जो बिखेर कर उड़ाने वालियां[2] फिर बोझ उठाने वालियां[3] फिर नर्म चलने वालियां[4]

मग़रिब व इशा व तहज्जुद **68 हदीस :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तमाम नमाज़ों के बा'द तस्बीह करने का हुक्म फ़रमाया। (بخاری) **हदीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द तेंतीस 33 मरतबा "سُبْحَانَ اللّٰہ" तेंतीस 33 मरतबा "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" तेंतीस 33 मरतबा "اَللّٰہُ اَکْبَرُ" और एक मरतबा "لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ،لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُوَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ" पढ़े उस के गुनाह बख़्शे जाएंगे चाहे समुन्दर के झागों के बराबर हों या'नी बहुत ही कसीर हों। (مسلم شریف) **69 :** या'नी ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام **70 :** या'नी सख़्रए बैतुल मक़्दिस से जो आस्मान की त़रफ़ ज़मीन का सब से क़रीब मक़ाम है, ह़ज़रते इसराफ़ील की निदा येह होगी : ऐ गली हुई हड्डियो ! बिखरे हुए जोड़ो ! रेज़ा रेज़ा शुदा गोश्तो ! परागन्दा बालो ! **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें फ़ैसले के लिये जम्अ़ होने का हुक्म देता है। **71 :** सब लोग। मुराद इस से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर फूंका जाना) है। **72 :** आख़िरत में। **73 :** मुर्दे मेह़शर की त़रफ़। **74 :** या'नी कुफ़्फ़ारे कुरैश। **75 :** कि उन्हें बज़ोर इस्लाम में दाख़िल करो, आप का काम दा'वत देना और समझा देना है। (وکان ھذاقبل الامربالقتال)
1 : सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ़, साठ आयतें, तीन सो साठ कलिमे, एक हज़ार दो सो उन्तालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी वोह हवाएं जो ख़ाक वग़ैरा को उड़ाती हैं। **3 :** या'नी वोह घटाएं और बदलियां जो बारिश का पानी उठाती हैं। **4 :** वोह कश्तियां जो पानी में ब सहूलत चलती हैं।

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۙ﴿۴﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۙ﴿۵﴾ وَّاِنَّ الدِّيْنَ

फिर हुक्म से बांटने वालियां[5] बेशक जिस बात का तुम्हें वा'दा दिया जाता है[6] ज़रूर सच है और बेशक इन्साफ़

لَوَاقِعٌ ؕ﴿۶﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ﴿۷﴾ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ﴿۸﴾

ज़रूर होना[7] आराइश वाले आस्मान की क़सम[8] तुम मुख़्तलिफ़ बात में हो[9]

يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ؕ﴿۹﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ

इस क़ुरआन से वोही औंधा किया जाता है जिस की क़िस्मत ही में औंधाया जाना हो[10] मारे जाएं दिल से तराशने वाले जो नशे में

سَاهُوْنَ ۙ﴿۱۱﴾ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿۱۲﴾ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ

भूले हुए हैं[11] पूछते हैं[12] इन्साफ़ का दिन कब होगा[13] उस दिन होगा जिस दिन वोह आग पर

يُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾

तपाए जाएंगे[14] और फ़रमाया जाएगा चखो अपना तपना येह है वोह जिस की तुम्हें जल्दी थी[15]

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿۱۵﴾ اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ

बेशक परहेज़ गार बाग़ों और चश्मों में हैं[16] अपने रब की अ़ताएं लेते हुए बेशक वोह

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ؕ﴿۱۶﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾

इस से पहले[17] नेकोकार थे वोह रात में कम सोया करते[18]

5 : या'नी फ़िरिश्तों की वोह जमाअ़तें जो ब हुक्मे इलाही बारिश व रिज़्क़ वग़ैरा तक़्सीम करती हैं और जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने मुदब्बिरातुल अम्र किया है और आ़लम में तदबीर व तसर्रुफ़ का इख़्तियार अ़ता फ़रमाया है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह तमाम सिफ़तें हवाओं की हैं कि वोह ख़ाक भी उड़ाती हैं बादलों को भी उठाए फिरती हैं फिर उन्हें ले कर ब सहूलत चलती हैं, फिर **अल्लाह** तआ़ला के बिलाद (शहरों) में उस के हुक्म से बारिश को तक़्सीम करती हैं। क़सम का मक़्सूदे अस्ली उस चीज़ की अ़ज़्मत बयान करना है जिस के साथ क़सम फ़रमाई गई क्यूं कि येह चीज़ें कमाले क़ुदरते इलाही पर दलालत करने वाली हैं, अरबाबे दानिश को मौक़अ़ दिया जाता है कि वोह उन में नज़र कर के बअ़्स व जज़ा पर इस्तिद्लाल करें कि जो क़ादिरे बरहक़ ऐसे उमूरे अ़जीबा पर क़ुदरत रखता है वोह अपनी पैदा की हुई चीज़ों को फ़ना करने के बा'द दोबारा हस्ती (ज़िन्दगी) अ़ता फ़रमाने पर बेशक क़ादिर है। **6 :** या'नी बअ़्स व जज़ा। **7 :** और हिसाब के बा'द नेकी बदी का बदला ज़रूर मिलना। **8 :** जिस को सितारों से मुज़य्यन फ़रमाया है कि ऐ अहले मक्का ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में और क़ुरआने पाक के बारे में **9 :** कभी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को साहिर कहते हो कभी शाइ़र कभी काहिन कभी मज्नून (مَعَاذَاللّٰه تَعَالٰى) इसी त़रह़ क़ुरआने करीम को कभी सेह्र बताते हो कभी शे'र कभी कहानत कभी अगलों की दास्तानें। **10 :** और जो महरूमे अज़ली है इस सआ़दत से महरूम रहता है और बहकाने वालों के बहकाए में आता है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने के कुफ़्फ़ार जब किसी को देखते कि ईमान लाने का इरादा करता है तो उस से नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कहते कि उन के पास क्यूं जाता है वोह तो शाइ़र हैं साहिर हैं काज़िब हैं (مَعَاذَاللّٰه تَعَالٰى) और इसी त़रह़ क़ुरआने पाक को कहते हैं कि वोह शे'र है सेह्र है किज़्ब है (مَعَاذَاللّٰه تَعَالٰى) **11 :** या'नी नशए जहालत में आख़िरत को भूले हुए हैं। **12 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से तमस्ख़ुर और तक्ज़ीब के त़ौर पर कि **13 :** उन के जवाब में फ़रमाया जाता है : **14 :** और उन्हें अ़ज़ाब दिया जाएगा। **15 :** और दुन्या में तमस्ख़ुर से कहा करते थे कि वोह अ़ज़ाब जल्दी लाओ जिस का वा'दा देते हो। **16 :** या'नी अपने

www.dawateislami.net

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَفِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَ
और पिछली रात इस्तिग़्फ़ार करते[19] और उन के मालों में हक़ था मंगता और
الْمَحْرُوْمِ ﴿۱۹﴾ وَفِی الْاَرْضِ اٰیٰتٌ لِّلْمُوْقِنِیْنَ ﴿۲۰﴾ وَفِیْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا
बे नसीब का[20] और ज़मीन में निशानियां हैं यक़ीन वालों को[21] और ख़ुद तुम में[22] तो क्या
تُبْصِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَفِی السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَ
तुम्हें सूझता नहीं और आस्मान में तुम्हारा रिज़्क़ है[23] और जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[24] तो आस्मान और ज़मीन के
الْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾ ع هَلْ اَتٰىكَ حَدِیْثُ ع ١٨/٢٣
रब की क़सम बेशक येह कुरआन हक़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो ऐ महबूब क्या तुम्हारे पास
ضَیْفِ اِبْرٰهِیْمَ الْمُكْرَمِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَیْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ وقف لازم
इब्राहीम के मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर आई[25] जब वोह उस के पास आ कर बोले सलाम कहा
سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۲۵﴾ فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِیْنٍ ﴿۲۶﴾
सलाम ना शनासा लोग हैं[26] फिर अपने घर गया तो एक फ़र्बा बछड़ा ले आया[27]
فَقَرَّبَهٗۤ اِلَیْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِیْفَةً ؕ قَالُوْا
फिर उसे उन के पास रखा[28] कहा क्या तुम खाते नहीं तो अपने जी में उन से डरने लगा[29] वोह बोले
لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِیْ صَرَّةٍ
डरिये नहीं[30] और उसे एक इल्म वाले लड़के की बिशारत दी इस पर उस की बीबी[31] चिल्लाती आई

रब की ने'मत में हैं बाग़ों के अन्दर जिन में लत़ीफ़ चश्मे जारी हैं। **17 :** दुन्या में **18 :** और ज़ियादा हिस्सा शब का नमाज़ में गुज़ारते। **19 :** या'नी रात तहज्जुद और शब बेदारी में गुज़ारते हैं और बहुत थोड़ी देर सोते हैं और शब का पिछला हिस्सा इस्तिग़्फ़ार में गुज़ारते हैं और इतने सो जाने को भी तक़्सीर समझते हैं **20 :** मंगता तो वोह जो अपनी ह़ाजत के लिये लोगों से सुवाल करे और मह़रूम वोह कि ह़ाजत मन्द हो और ह़याअन (शरमिन्दगी के बाइस) सुवाल भी न करे। **21 :** जो **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत और उस की कुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करती हैं। **22 :** तुम्हारी पैदाइश में और तुम्हारे तग़य्युरात में और तुम्हारे ज़ाहिरो बात़िन में **अल्लाह** तआ़ला की कुदरत के ऐसे बे शुमार अ़जाइबो ग़राइब हैं जिन से बन्दे को उस की शाने ख़ुदाई मा'लूम होती है। **23 :** कि उसी त़रफ़ से बारिश कर के ज़मीन को पैदावार से मालामाल किया जाता है। **24 :** आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब का वोह सब आस्मान में मक्तूब है। **25 :** जो दस या बारह फ़िरिश्ते थे। **26 :** येह बात आप ने अपने दिल में फ़रमाई **27 :** नफ़ीस भुना हुवा **28 :** कि खाएं और येह मेज़बान के आदाब में से है कि मेहमान के सामने खाना पेश करे। जब उन फ़िरिश्तों ने न खाया तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **29 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि आप के दिल में बात आई कि येह फ़िरिश्ते हैं और अ़ज़ाब के लिये भेजे गए हैं। **30 :** हम **अल्लाह** तआ़ला के भेजे हुए हैं। **31 :** या'नी ह़ज़रते सारह।

www.dawateislami.net

فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ

फिर अपना माथा ठोंका और बोली क्या बुढ़िया बांझ[32] उन्हों ने कहा तुम्हारे रब ने यूंही फ़रमा दिया है

اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

और वोही ह़कीम दाना है

32 : जिस के कभी बच्चा नहीं हुवा और नव्वे या निनानवे साल की उ़म्र हो चुकी, मत़लब येह था कि ऐसी उ़म्र और ऐसी ह़ालत में बच्चा होना निहायत तअ़ज्जुब की बात है।

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ

इब्राहीम ने फ़रमाया तो ऐ फ़िरिश्तो तुम किस काम से आए[33] बोले हम एक मुजरिम क़ौम की त़रफ़

مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ

भेजे गए हैं[34] कि उन पर गारे के बनाए हुए पथ्थर छोड़ें जो तुम्हारे रब के पास ह़द से

رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَمَا

बढ़ने वालों के लिये निशान किये रखे हैं[35] तो हम ने उस शह्र में जो ईमान वाले थे निकाल लिये तो

وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيْهَاۤ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ

हम ने वहां एक ही घर मुसल्मान पाया[36] और हम ने उस में[37] निशानी बाक़ी रखी

يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾ وَفِيْ مُوْسٰۤى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ

उन के लिये जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं[38] और मूसा में[39] जब हम ने उसे रोशन सनद ले कर

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾ فَاَخَذْنٰهُ

फ़िरऔ़न के पास भेजा[40] तो अपने लश्कर समेत फिर गया[41] और बोला जादूगर है या दीवाना तो हम ने उसे

وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا

और उस के लश्कर को पकड़ कर दरिया में डाल दिया इस ह़ाल में कि वोह अपने आप को मलामत कर रहा था[42] और आ़द में[43] जब हम ने

عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ

उन पर ख़ुश्क आंधी भेजी[44] जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की त़रह़

كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾ وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا

कर छोड़ती[45] और समूद में[46] जब उन से फ़रमाया गया एक वक़्त तक बरत लो[47] तो उन्हों ने

33 : या'नी सिवाए इस बिशारत के तुम्हारा और क्या काम है ? **34 :** या'नी क़ौमे लूत़ की त़रफ़ **35 :** उन पथ्थरों पर निशान थे जिन से मा'लूम होता था कि येह दुन्या के पथ्थरों में से नहीं हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि हर एक पथ्थर पर उस का नाम मक्तूब था जो उस से हलाक किया जाने वाला था। **36 :** या'नी एक ही घर के लोग और वोह ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام और आप की दोनों साह़िब ज़ादियां हैं। **37 :** या'नी क़ौमे लूत़ के उस शह्र में काफ़िरों को हलाक करने के बा'द **38 :** ताकि वोह इ़ब्रत ह़ासिल करें और उन के जैसे अफ़्आ़ल से बाज़ रहें और वोह निशानी उन के उजड़े हुए दियार थे या वोह पथ्थर जिन से वोह हलाक किये गए या वोह काला बदबूदार पानी जो उस सर ज़मीन से निकला था। **39 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए़ में भी निशानी रखी **40 :** रोशन सनद से मुराद ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात हैं जो आप ने फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों पर पेश फ़रमाए **41 :** या'नी फ़िरऔ़न ने मअ़ अपनी जमाअ़त के ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाने से ए'राज़ किया **42 :** कि क्यूं वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न लाया और क्यूं उन पर त़ा'न किये। **43 :** या'नी क़ौमे आ़द के हलाक करने में भी क़ाबिले इ़ब्रत निशानियां हैं **44 :** जिस में कुछ भी ख़ैरो बरकत न थी येह हलाक करने वाली हवा थी **45 :** ख़्वाह वोह आदमी

www.dawateislami.net

عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوْا

अपने रब के हुक्म से सरकशी की[48] तो उन की आंखों के सामने उन्हें कड़क ने आ लिया[49] तो वोह न खड़े

مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ

हो सके[50] और न वोह बदला ले सकते थे और उन से पहले क़ौमे नूह को हलाक फ़रमाया बेशक

ع ۲ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿۴۷﴾

वोह फ़ासिक़ लोग थे और आस्मान को हम ने हाथों से बनाया[51] और बेशक हम वुस्अ़त देने वाले हैं[52]

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا

और ज़मीन को हम ने फ़र्श किया तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले और हम ने हर चीज़ के दो

زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَفِرُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ

जोड़ बनाए[53] कि तुम ध्यान करो[54] तो अल्लाह की त़रफ़ भागो[55] बेशक मैं उस की त़रफ़ से तुम्हारे लिये सरीह़

مُّبِيْنٌ ﴿۵۰﴾ ج وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۵۱﴾ ج

डर सुनाने वाला हूं और अल्लाह के साथ और मा'बूद न ठहराओ बेशक मैं उस की त़रफ़ से तुम्हारे लिये सरीह़ डर सुनाने वाला हूं

كَذٰلِكَ مَاۤ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ

यूंही[56] जब इन से अगलों के पास कोई रसूल तशरीफ़ लाया तो येही बोले कि जादूगर है या

مَجْنُوْنٌ ﴿۵۲﴾ ج اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿۵۳﴾ ج فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَاۤ

दीवाना क्या आपस में एक दूसरे को येह बात कह मरे हैं बल्कि वोह सरकश लोग हैं[57] तो ऐ मह़बूब तुम उन से मुंह फेर लो तो

हों या जानवर या और अम्वाल जिस चीज़ को छू गई उस को हलाक कर के ऐसा कर दिया गोया कि वोह मुद्दतों की हलाक शुदा गली हुई है। **46 :** या'नी क़ौमे समूद के हलाक में भी निशानियां हैं **47 :** या'नी वक़्ते मौत तक दुन्या में ज़िन्दगानी कर लो येही ज़माना तुम्हारी मोहलत का है। **48 :** और ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और नाक़ा की कूंचें काटीं **49 :** और होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक कर दिये गए। **50 :** वक़्ते नुज़ूले अ़ज़ाब न भाग सके। **51 :** अपने दस्ते क़ुदरत से। **52 :** उस को इतनी कि ज़मीन मअ़ अपनी फ़ज़ा के इस के अन्दर इस त़रह आ जाए जैसे कि एक मैदाने वसीअ़ में गेंद पड़ी हो या येह मा'ना हैं कि हम अपनी ख़ल्क़ पर रिज़्क़ वसीअ़ करने वाले हैं। **53 :** मिस्ल आस्मान और ज़मीन और सूरज और चांद और रात और दिन और ख़ुश्की व तरी और गरमी व सरदी और जिन्न व इन्स और रोशनी व तारीकी और ईमान व कुफ़्र और सआ़दत व शक़ावत और ह़क़ व बात़िल और नर व मादा के **54 :** और समझो कि इन तमाम जोड़ों का पैदा करने वाला फ़र्दे वाह़िद है, न उस की नज़ीर है न शरीक न ज़िद न निद, वोही मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है। **55 :** उस के मा सिवा को छोड़ कर उस की इ़बादत इख़्तियार करो। **56 :** जैसे कि इन कुफ़्फ़ार ने आप की तक्ज़ीब की और आप को साह़िर व मजनून कहा ऐसे ही **57 :** या'नी पहले कुफ़्फ़ार ने अपने पिछलों को येह वसिय्यत तो नहीं की, कि तुम अम्बिया की तक्ज़ीब करना और उन की शान में इस त़रह की बातें बनाना, लेकिन चूंकि सरकशी और तुग़यान की इ़ल्लत दोनों में है इस लिये गुमराही में एक दूसरे के मुवाफ़िक़ रहे।

www.dawateislami.net

اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَا

तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं[58] और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है और

خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ

मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें[59] मैं उन से कुछ रिज़्क़ नहीं मांगता[60]

وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

और न येह चाहता हूं कि वोह मुझे खाना दें[61] बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला क़ुव्वत वाला क़ुदरत वाला है[62]

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

तो बेशक उन ज़ालिमों के लिये[63] अ़ज़ाब की एक बारी है[64] जैसे उन के साथ वालों के लिये एक बारी थी[65] तो मुझ से जल्दी न करें[66]

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٢ ١٤ ٢

तो काफ़िरों की ख़राबी है उन के उस दिन से जिस का वा'दा दिये जाते हैं[67]

اٰیاتها ٤٩ | ٥٢ سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ ٧٦ | رکوعاتها ٢

सूरए तूर मक्किय्या है, इस में उन्चास आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾ وَّالْبَيْتِ

तूर की क़सम[2] और उस नविश्ते की[3] जो खुले दफ़्तर में लिखा है और बैते

58 : क्यूं कि आप रिसालत की तब्लीग़ फ़रमा चुके और दा'वत व इर्शाद में जह्दे बलीग़ सर्फ़ कर चुके और आप ने अपनी सई में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा। **शाने नुज़ूल :** जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ग़मगीन हुए और आप के अस्हाब को बहुत रन्ज हुवा कि जब रसूल عَلَيْهِ السَّلَام को ए'राज़ करने का हुक्म हो गया तो अब वह्य क्यूं आएगी और जब नबी ने उम्मत को तब्लीग़ ब त़रीक़े अतम फ़रमा दी और उम्मत सरकशी से बाज़ न आई और रसूल को उन से ए'राज़ का हुक्म मिल गया तो वक़्त आ गया कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हो, इस पर वोह आयते करीमा नाज़िल हुई जो इस आयत के बा'द है और इस में तस्कीन दी गई कि सिल्सिलए वह्य मुन्तक़त़अ़ नहीं हुवा है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नसीह़त सआ़दत मन्दों के लिये जारी रहेगी, चुनान्चे इर्शाद हुवा **59 :** और मेरी मा'रिफ़त हो। **60 :** कि मेरे बन्दों को रोज़ी दें या सब की नहीं तो अपनी ही रोज़ी ख़ुद पैदा करें क्यूं कि रज़्ज़ाक़ मैं हूं और सब की रोज़ी का मैं ही कफ़ील हूं। **61 :** मेरी ख़ल्क़ के लिये। **62 :** सब को वोही देता वोही पालता है। **63 :** जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म किया **64 :** हिस्सा है नसीब है **65 :** या'नी उममे साबिक़ा (गुज़श्ता उम्मतों) के कुफ़्फ़ार के लिये जो अम्बिया की तक्ज़ीब में उन के साथी थे उन का अ़ज़ाब व हलाक में हिस्सा था **66 :** अ़ज़ाब नाज़िल करने की। **67 :** और वोह रोज़े क़ियामत है। **1 :** सूरए तूर मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, उन्चास 49 आयतें, तीन सो बारह 312 कलिमे, एक हज़ार पांच सो 1500 हर्फ़ हैं। **2 :** या'नी उस पहाड़ की क़सम जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को शरफ़े कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया। **3 :** इस नविश्ते से मुराद या तौरैत है या क़ुरआन या लौहे महफ़ूज़ या आ'माल नवीस फ़िरिश्तों के दफ़्तर।

www.dawateislami.net